



12

चिड़िया का दाना

प्राचीन काल में कहानियों द्वारा ही लोग अपने बच्चों को विभिन्न देशों और लोक संस्कृतियों का ज्ञान देते थे। इन कहानियों में उस समय की स्थितियों और अनुभवों का वर्णन मिलता है। एक लोक-कथा इस प्रकार है :-

एक दिन प्रातः एक चिड़िया दाना चुगने निकली। खेत में उसे मटर का एक दाना पड़ा मिला। वह उसे उठा लाई और बहुत खुश हुई। उसने सोचा कि डटकर भोजन करेगी, मगर फिर उसके मन में आया कि भोजन करने के पहले नहा लूँ। वह नहाने के लिए नदी की ओर उड़ चली; मगर समस्या यह थी कि मटर के दाने को कहाँ छुपाए ? इसे जमीन पर ही छोड़ दे तो चीटियाँ खा जाएँगी या कोई और पक्षी ले उड़ेगा। उसने मटर के दाने को पुल की मेड़ पर रख दिया और उसकी मरम्मत कर रहे एक बढ़ई से कहा, “भइया, जरा इसे देखते रहना।”



चिड़िया ने नदी से लौटकर बढ़ई से पूछा तो वह बोला, “मैं तुम्हारा नौकर थोड़ा ही हूँ। मुझे तो सरकार से वेतन मिलता है। तुम्हारा मटर का दाना गिर गया होगा।”

चिड़िया बहुत निराश हुई। उसे लगा कि दूसरे पक्षी भी अपने घोंसलों से निकल चुके हैं और उन्होंने उस दाने को खा लिया होगा। वह सोच ही रही थी कि एक सिपाही उधर से निकला। वह उसके पास गया और बोली, “सिपाही जी, एक गरीब चिड़िया की मदद कीजिए। मेरा मटर का दाना कहीं गुम हो गया है। एक बढ़ई पुल की मरम्मत कर रहा था। मैंने उससे कहा कि दाने का ध्यान रखे लेकिन उसने या तो दाना चुरा लिया है अथवा वह कहीं गिर गया है।”



सिपाही बोला, "ऐ घमंडी चिड़िया, तेरी यह मजाल कि मुझे जाते हुए रोके ! मेरा काम कानून और शांति बनाए रखना है। उसी की मुझे तनख्वाह मिलती है। तुम मरो या जियो, मुझे इससे क्या !"

चिड़िया को डाँट पड़ी तो वह डर गई।

तभी उधर से एक थानेदार निकला। उसने उसे रोका और सारी कहानी बताकर कहा, "थानेदार जी, क्या आप मुझ गरीब की सहायता नहीं करेंगे ?"



थानेदार दहाड़ा, "तुम्हारी यह हिम्मत कि मुझे रोक रही हो ? जानती नहीं, मंत्री जी दौरे पर आ रहे हैं, और मुझे सारा बंदोबस्त करना है, उन्होंने मेरे काम को पसंद न किया तो मेरी तरक्की कैसे होगी ? तुम्हारा मटर का दाना खो गया है तो मुझे क्या?" यह कहकर थानेदार भी चल दिया।

चिड़िया सोचने लगी कि यह कैसा देश है, जहाँ लोग इतने स्वार्थी हैं कि किसी और की समस्या की जरा भी चिंता नहीं करते ? वह यह सोच ही रही थी कि उसे घोड़े पर सवार मंत्री आता दिखाई दिया। उसने उसे रोका और बोली, "मंत्री जी, क्या आप मुझ गरीब पर दया नहीं करेंगे ? मेरा मटर का दाना गुम हो गया है और इधर से जितने भी सरकारी कर्मचारी निकले, व मेरी सहायता करने से इनकार कर रहे हैं।"

मंत्री बोला, "मैं तुम्हारी सहायता तो करना चाहता हूँ लेकिन मेरे पास समय नहीं है। राजा इधर आएंगे तो उनका स्वागत मुझे ही करना है।" यह कहकर मंत्री भी वहाँ से खिसक लिया।

चिड़िया को इस बात से खुशी हुई कि किसी ने उससे भलमनसाहत से बात तो की। वह सोच ही रही थी कि इतने में स्वयं राजा हाथी पर सवार होकर उधर से निकला। चिड़िया ने उसे रोका और बोली, "राजा जी, आप तो इस देश के मालिक हैं। क्या आप मेरी सहायता करेंगे?"



राजा को यह बात अच्छी नहीं लगी कि कोई छोटी-सी चिड़िया ऐसी धृष्टता करे। वह तो अपनी प्रजा को दर्शन देने जा रहा था और चिड़िया उसे रोक रही थी। उसने चिड़िया की किसी बात का उत्तर नहीं दिया। राजा का अंगरक्षक चिल्लाया, "हट जाओ!" ... और राजा का हाथी चल दिया।



अब चिड़िया को विश्वास हो गया कि कुछ नहीं हो सकता। वह सोचने लगी कि राजा से बड़ा कौन है। ऐसे



क्रूर राजा के रहते मैं अपना मटर का दाना छोड़कर नहाने क्यों गई? सोचती हुई वह निराश बैठी थी कि उसने देखा एक चींटी जा रही है। उसने जाकर चींटी को सारी कहानी बताई।

चींटी बोली, "बहन, मैं अभी जाती हूँ।" चींटी हाथी के पास गई और उसके कान में बोली, "तुमने सुना ही होगा कि चिड़िया ने राजा से क्या कहा। मैं चाहती हूँ कि तुम राजा को चिड़िया की सहायता करने पर

मजबूर करो, नहीं तो मैं तुम्हारी सूँड़ में काट लूँगी।"

हाथी ने यह धमकी सुनी तो राजा से बोला, "आप चिड़िया की बात सुन लीजिए, नहीं तो वह मुझे काट लेगी। उसने मुझे काट लिया तो मैं आपको गिरा दूँगा, तब हो सकता है आपकी हड्डी-पसली टूट जाए या आप गिरकर मर जाएं।"



2. अपना दाना वापस पाने के लिए चिड़िया कई लोगों के पास गई किंतु इन लोगों ने चिड़िया को झिड़क दिया। लिखें कि इन लोगों ने चिड़िया को क्या कहकर झिड़क दिया –

व्यक्ति	क्या कहकर झिड़क दिया?
● बड़ई	—
● सिपाही	—
● थानेदार	—
● मंत्री	—
● राजा	—

3. सोच-विचार : बताइए –

(क) किसी का कोई जरूरी सामान नहीं मिल रहा है। आप उसकी मदद कैसे करेंगे ?

(ख) आपकी क्या राय है ?

- असली दोषी कौन था ?
- मटर के एक दाने के लिए चिड़िया की भाग-दौड़ के विषय में।

(ग) यदि चींटी भी मदद करने से इंकार कर देती तो चिड़िया और किसके पास जाती ?

4. भाषा के रंग –

(क) समानार्थक शब्द लिखिए –

खुश, थानेदार, मदद, तरक्की, घमंडी

- (ख) ● बड़ई हँसकर बोला।
● अंगरक्षक जोर से चिल्लाया।

ऊपर दिए गए वाक्यों में 'हँसकर' तथा 'जोर से' शब्द क्रमशः 'बोला' और 'चिल्लाया' क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रिया-विशेषण कहते हैं।

नीचे दिए गए वाक्यों में से 'क्रिया-विशेषण' शब्द चुनकर लिखिए –

- चिड़िया बहुत निराश हुई।
- उसने मंत्री से अपनी कहानी रो-रो कर कही।
- हाथी बोला, 'मैं अपनी पीठ से आप को धड़ाम से पटक दूँगा।'
- चिड़िया ने छककर भोजन किया।



को (ग) विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए -

चिड़िया ने नदी से लौटकर बढ़ई से पूछा तो वह बोला मैं तुम्हारा नौकर थोड़े ही हूँ मुझे तो सरकार से वेतन मिलता है तुम्हारा मटर का दाना गिर गया होगा

5. तुम्हारी कलम से -

अपने क्षेत्र में प्रचलित किसी लोक-कथा को अपने शब्दों में लिखिए।

6. अब करने की बारी -

(क) आपके घर या आस-पास में बड़े-बुजुर्ग अक्सर ऐसी लोक-कथाएँ सुनाते होंगे। गुरु जी से कहकर अपने गाँव के किसी बड़े-बुजुर्ग को विद्यालय में बुलाइए और उनसे लोक-कथाएँ सुनिए।

(ख) विभिन्न प्रदेशों की लोक-कथाएँ पुस्तकालय से पढ़िए।

7. मेरे दो प्रश्न : कहानी के आधार पर दो सवाल बनाइए -

1.

2.

8. इस कहानी से -

(क) मैंने सीखा -

(ख) मैं करूँगी/करूँगा -

यह भी जानिए -

लोक-कथाओं की तरह ही लोक जीवन में थोड़े शब्दों में बड़ी बात को प्रभावी ढंग से कहने के लिए लोकोक्तियाँ प्रचलित होती हैं जैसे - "अधजल गगरी छलकत जाय", "थोथा चना बाजे घना"।

